मानवीय क्रियाकलापों में नैतिकता का परिणाम
(Consequences of Ethics in Human Actions)

किसी कर्म के उत्तरदायित्व का निर्धारण करते हुए हमें यह देखना आवश्यक है कि-

1. किन परिस्थितियों में कर्त्ता के द्वारा वह कार्य किया गया?
2. उसका उद्देश्य क्या था?
3. किसने कार्य किया, किसके प्रभाव में किया?

कब कोई व्यक्ति जिम्मेदार होगा-

1. जब कोई व्यक्ति अपनी स्वतंत्र इच्छानुसार, सोच-समझकर कोई कर्म करता है तब वह उस कर्म के परिणाम के लिए उत्तरदायी होगा।
2. जब कोई व्यक्ति दूसरे को समझाकर प्रभावित कर, डराकर या लालच देकर कोई कर्म कराता है, तो वह भी परिणाम का भागीदार होने लगता है।

सामान्यत: अच्छे कर्म का सकारात्मक परिणाम और बुरे कर्म का नकारात्मक परिणाम होता है। परंतु कभी-कभी विपरीत स्थिति भी संभव है। तब वैसी स्थिति में उत्तरदायित्व के निर्धारण के समय परिस्थिति, संदर्भ, भावना, उद्देश्य आदि को ध्यान में रखना आवश्यक हो जाता है।

जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में मानवीय क्रियाकलापों में नैतिकता के परिणाम को हम निम्न प्रकार से देख सकते हैं-

1. सामाजिक क्षेत्र:

(a) **नकारात्मक कार्य** → परिणामस्वरूप → लिंगभेद, जातिभेद, नस्लभेद, छुआछूत, ऊंच-नीच का भाव, यौन उत्पीड़न, बाल विवाह, भ्रूण हत्या, अंधविश्वासों को बढ़ावा, शोषण एवं अत्याचार, दहेज प्रथा, भोगवाद, सामाजिक विषमता आदि को बढ़ावा।

(b) **सकारात्मक कार्य** → परिणामस्वरूप → लिंग समानता, अस्पृश्यता निवारण, सामाजिक न्याय, बंधुत्व की भावना, मानवतावादी दृष्टिकोण, सामाजिक पूंजी में वृद्धि, कुरीतियों का निवारण, सामाजिक सद्भाव, स्वच्छ भारत अभियान आदि को बढ़ावा।

2. आर्थिक क्षेत्र

(a) **नकारात्मक कार्य** → परिणामस्वरूप → भ्रष्टाचार, घोटाला, कर-वंचना, गरीबी, बेरोजगारी, आर्थिक विषमता, जमाखोरी, मुनाफाखोरी, क्रोनी कैपिटलिज्म का बढ़ावा, मिलावट, लोकनिधि का दुरूपयोग, विकास की धीमी दर, कुपोषण आदि।

(b) **सकारात्मक कार्य** → परिणामस्वरूप → समावेशी विकास, सतत् विकास, गरीबी उन्मूलन, मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति, सरकारी नीतियो एवं योजनाओं का प्रभावी एवं समयबद्ध क्रियान्वयन, आर्थिक स्वावलम्बन।

3. राजनीतिक क्षेत्र

(a) **नकारात्मक कार्य** → परिणामस्वरूप → राजनीतिक-आपराधिक गठजोड़, भ्रष्टाचार, जनहित के कार्यों से तटस्थता, भाई-भतीजावाद, सांप्रदायिकता, प्रांतवाद, भाषावाद, नक्सलवाद, आतंकवाद।

(b) **सकारात्मक कार्य** → परिणामस्वरूप → लोकतंत्र की स्थापना, लोककल्याणकारी राज्य की अवधारणा साकारित, जन लोकपाल, जनहितैषी कार्यों में सलंग्नता, लोकतांत्रिक मूल्यों का साकारीकरण, पंथनिरपेक्षता।

4. प्रशासनिक क्षेत्र

(a) **नकारात्मक कार्य** → परिणामस्वरूप → लाल फीताशाही, भ्रष्टाचार, औपनिवेशिक मानसिकता, नेताओं व नौकरशाहों के बीच गठजोड़, दायित्व से पलायन, घूसखोरी, राजनीतिक तरफदारी, दलगत निष्ठा, पक्षपातपूर्ण व्यवहार।

(b) **सकारात्मक कार्य** → परिणामस्वरूप → जवाबदेहिता, पारदर्शिता, सत्यनिष्ठता, गैर पक्षपातपूर्ण तरीका, सुशासन, सार्वजनिक कार्यों में जनसहभागिता, नागरिक केन्द्रित-शासन, नवाचार, संवेदनशीलता, वस्तुनिष्ठता, लोकनिधि का सदुपयोग, गुणवत्तापूर्ण सेवा की आपूर्ति, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर देश की अच्छी छवि का निर्माण

5. धार्मिक क्षेत्र

(a) **नकारात्मक कार्य** → परिणामस्वरूप → साम्प्रदायिकता, कट्टरता, परस्पर अविश्वास, दंगे, धार्मिक वैमनस्य।

(b) **सकारात्मक कार्य** → परिणामस्वरूप → धार्मिक सहिष्णुता, धार्मिक सद्भाव, सर्वधर्म समभाव, धार्मिक समरसता आदि।

6. पर्यावरणीय क्षेत्र

(a) **नकारात्मक कार्य** → परिणामस्वरूप → जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग, ग्लोबल बॉयलिंग, एसिड रेन, ओजोन परत का क्षरण, मैग्रोंव विनाश, प्राकृतिक आपदायें, भूस्खलन, पर्यावरणीय असंतुलन,

(b) **सकारात्मक कार्य** → परिणामस्वरूप → सतत् विकास, गैर-परम्परागत ऊर्जा स्रोत, पर्यावरण मित्र तकनीक, नदियों का कायाकल्प (जैसे टेम्स नदी, साबरमती नदी), ग्रीन एनर्जी को बढ़ावा।